"यौन कार्य एक वास्तविक कार्य है"

यौन कार्य और "यौन तस्करी" और इनके बीच के अंतर को समझना

परिभाषाएं

तस्करी

"धमकी या बल या अन्य प्रकार के दबाव के प्रयोग से – अपहरण, धोखाधड़ी, धोखे, शक्ति के दुरुपयोग से या किसी की कमज़ोर स्थिति का लाभ उठाने से या किसी अन्य व्यक्ति पर नियंत्रण रखने वाले व्यक्ति की सहमति प्राप्त करने के लिये भुगतान या लाभ देने से – किसी व्यक्ति को शोषण के उद्देश्य से स्वीकार करना, उसकी भर्ती, निर्वासन, या स्थानांतरण करना या उसे आश्रय देना" (संयुक्त राष्ट्र "व्यक्तियों और विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में तस्करी को रोकने, दबाने और दंडित करने के लिये प्रोटोकॉल")

यौन कार्य

- यौन कार्य सहमति देने वाले वयस्कों के बीच एक व्यावसायिक लेन–देन है।
- यौन कर्मियों में "महिला, पुरुष और ट्रांसजेंडर वयस्क और युवा (18–24 वर्ष) शामिल हैं, जो नियमित रूप से या कभी–कभी यौन सेवाओं के बदले में पैसे या वस्तुएं प्राप्त करते हैं" – संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन।

तस्करी के 3 अलग–अलग घटक हैं – ये सभी किसी अपराध को "तस्करी" के रूप में वर्गीकृत किये जाने से पहले उपस्थित होने चाहिये।

कार्यवाही	व्यक्तियों की भर्ती, निर्वासन, स्थानांतरण करना, उन्हें आश्रय देना या उन्हें शोषण के उद्देश्य से स्वीकार करना।	निर्वासन
माध्यम	धमकी या बल या अन्य प्रकार के दबाव के प्रयोग से, अपहरण, धोखाधड़ी, धोखे, शक्ति के दुरुपयोग से, या किसी के कमज़ोर स्थिति का लाभ उठाने से	दबाव
उद्देश्य	शोषण के उद्देश्य से।	शोषण

मानव तस्करी =

व्यक्तियों को **शोषण** के उद्देश्य से, दबाव का प्रयोग करके **निर्वासन** (भर्ती) करना।

यौन कार्य और तस्करी के बीच अंतर

- एक आम भ्रांति है कि सभी यौन कर्मी तस्करी या शोषण का शिकार होते हैं। दुनियाभर में, यौन कर्मी और यौन कर्मियों के अधिकारों के पैरोकार इस गलत धारणा को चुनौती देते हैं।
- यौन कर्मियों के अधिकारों के पैरोकारों का तर्क है कि सहमति देने वाले वयस्कों के रूप में, यौन कर्मी यौन सेवाओं को बेचने का विकल्प चुनते हैं। यौन कार्य के सामाजिक कलंक और अपराधीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थितियां शोषक और अस्वस्थ हो सकती हैं– ना कि स्वयं कार्य। यौन कर्मियों द्वारा सामना किये जाने वाले जोखिम एक तरफ दंडात्मक कानूनों, नीतियों और प्रथाओं से पैदा होते हैं और गलत इरादे वाले ग्राहकों, कानून प्रवर्तन या तीसरे पक्षों (जैसे वेश्यालय के रखवालों, प्रबंधकों या कोई भी अन्य व्यक्ति जो यौन कार्य की सुविधा प्रदान करता है) के बीच असमान शक्ति संबंधों द्वारा पैदा होते हैं और दूसरी ओर यौन कर्मियों द्वारा पैदा होते हैं।
- यौन कार्य और तस्करी के खतरनाक सम्मिश्रण को प्रारंभिक मानव तस्करी विरोधी कानूनों द्वारा आगे बढ़ाया गया था। संयुक्त राष्ट्र 1949 की 'मानव तस्करी के सभी रूपों के दमन और दूसरों की वेश्यावृत्ति के शोषण संबंधी अभिसमय (कन्वेंशन)' की प्रस्तावना ने उल्लेख किया कि "वेश्यावृत्ति व्यक्तियों की गरिमा और मूल्य के साथ बेमेल है और व्यक्ति के कल्याण को खतरे में डालती है" और इसमें यौन कार्य पर आपत्तिजनक प्रावधान निहित है। इस कारण से कई देशों ने अभिसमय की पुष्टि नहीं की।
- हाल ही में, 'व्यक्तियों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में तस्करी को रोकने, दबाने और दंडित करने के लिये प्रोटोकॉल' (या संयुक्त राष्ट्र तस्करी प्रोटोकॉल) ने कन्वेंशन को हटा दिया, और 2000 में इसे संयुक्त राष्ट्रीय आम सभा द्वारा अपनाया गया। इसे 170 से अधिक देशों द्वारा अनुमोदित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र तस्करी प्रोटोकॉल तस्करी की एक संक्षिप्त परिभाषा प्रदान करता है और यौन कार्य और तस्करी को साथ नहीं जोड़ता है।
- यौन कार्य और तस्करी के बीच के अंतर को समझना तस्करी–विरोधी प्रभावी अभियानों के लिये एक आवश्यक कदम है जो तस्करी को संबोधित करता है और यौन कर्मियों के अधिकारों का सम्मान करता है।

यौन कार्य और तस्करी के सम्मिश्रण के खतरे

- खराब रूप से तैयार किये गये तस्करी–विरोधी हस्तक्षेप यौन कर्मियों को अनिवार्य रूप से पीड़ितों के रूप में ही चित्रित करते हैं जो गलत है और इस प्रकार यौन कार्य से जुड़े सामाजिक कलंक को और बढ़ाते हैं।
- इसकी वजह से तस्करी के वास्तविक शिकार छूट जाते हैं जिन्हें तत्काल सहायता की आवश्यकता होती है, और संसाधन उन यौन कर्मियों को "बचाने" पर केंद्रित होते हैं जो हस्तक्षेप या बचाव की मांग नहीं कर रहे होते हैं।
- यह यौन कर्मी और यौन कर्मी ग्राहक के हिंसा और दुर्व्यवहार के प्रति जोखिम को बढ़ाता है।
- यह अधिकारियों के प्रति यौन कर्मी के अविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें सेवाओं और समर्थन से दूर कर देता है।
- यह यौन कर्मियों और ग्राहकों को गिरफ्तारी, उत्पीड़न या "बचाये जाने" के डर के कारण यौन उद्योग में दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने या तस्करी की घटनाओं में न्याय तक पहुँच पाने से हतोत्साहित करता है।
- यौन शोषण के प्रयोजनों के लिये तस्करी पर अत्यधिक ज़ोर देने का अर्थ है कि अन्य क्षेत्रों – जैसे कि श्रम या घरेलू कार्य क्षेत्र – पर कम ध्यान दिया जाता है जहाँ तस्करी प्रचलित है।

'तस्करी और यौन कार्य का सम्मिश्रण वेश्यावृत्ति–विरोधी और अप्रवास–विरोधी दोनों लॉबियों को अपने संबंधित एजेंडा को पूरा करने के लिये आवश्यक गोला–बारूद प्रदान करता है। वेश्यावृत्ति–विरोधी समूह वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिये तस्करी–विरोधी बयानबाजी का उपयोग करते हैं। अप्रवास–विरोधी लॉबी अप्रवास–विरोधी प्रतिबंधों को बढ़ाने के लिये 'यौन कार्य हिंसा का रूप है' और तस्करी–विरोधी बहस का उपयोग करती है। यौन कर्मियों की गतिशीलता पर प्रतिबंध लगाने को सही ठहराने के लिये वे प्रवास के दौरान उनकी अरक्षितता पर ज़ोर देते हैं'' – *ग्लोबल नेटवर्क ऑफ सेक्स वर्क प्रोजेक्टस*

केस स्टडी

एक प्रमुख उदाहरणः प्रवासी यौन कार्य और तस्करी को जोड़ना

प्रवासी यौन कर्मियों को नियमित रूप से तस्करी के शिकार के रूप में देखा जाता है, और तस्करी–विरोधी हस्तक्षेप जैसे 'छापे मारना और बचाव' अभियान उन स्थानों को लक्षित करते हैं जहाँ प्रवासी यौन कर्मी काम करते हैं। 'छापे मारना और बचाव अभियान' अक्सर मानव अधिकारों के दूरगामी उल्लंघन से जुड़े होते हैं, प्रवासी यौन कर्मियों के देशान्तरण की ओर ले जाते हैं, और यौन कर्मियों को सामाजिक सेवाओं तक पहुँचने से दूर कर देते हैं।

''तस्करी विरोधी नीतियों ने यौन कर्मियों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है; उनका उपयोग अनिर्दिष्ट अप्रवासियों का पता लगाने और महिलाओं को निर्वासित करने के लिये किया गया है। आंकड़ों में प्रवासी यौन कर्मियों को जोखिम वाली महिलाओं के रूप में गिना जाता है लेकिन इन महिलाओं को केवल देशान्तरित किया जाता है।" *कोलेक्टिवो हेटैरा, स्पेन*

यौन कार्य, शोषण और प्रवास / गतिशीलता मॉडल

नीलाः यदि यौन कार्य गतिशीलता के साथ प्रतिच्छेद करता है, तो यह आम तौर पर प्रवासी यौन कार्य या मोबाइल यौन कर्मियों को संदर्भित करता है।
जैसे कि एक यौन कर्मी जो अपने गाँव या शहर को छोड़कर कहीं और काम करने के लिये जाती है और अपने बच्चों की स्कूल फीस के लिये पैसे भेजती है।

लालः यदि यौन कार्य हिंसा या शोषण के साथ ओवरलैप होता है, यह यौन कार्य के संदर्भ में यौन या श्रम शोषण को संदर्भित करेगा।
जैसे कि एक वेश्यालय का मालिक यौन कर्मियों को लंबे समय तक काम करने के लिये मज़बूर करता है या उन्हें ग्राहकों को मना करने की अनुमति नहीं देता है।

हराः यदि गतिशीलता शोषण या हिंसा के साथ ओवरलैप होती है और संयुक्त राष्ट्र तस्करी प्रोटोकॉल के सभी तीन तत्व मौजूद हैं (निर्वासन, दबाव और शोषण), तो यह मानव तस्करी होगी।
जैसे कि एक निर्माण श्रमिक को दूसरे देश में एक निर्माण स्थल पर काम करने के लिये भर्ती किया जाता है और उसे कई तरह के लाभों का वादा किया जाता है। जब वह साइट पर आता है, तो उसके नियोक्ता पासपोर्ट जब्त कर लेते हैं और उसका पासपोर्ट वापस करने से पहले उसे काम करने के लिये मजबूर किया जाता है।

पीलाः यदि यौन सेवाओं का आदान–प्रदान, शोषण और गतिशीलता प्रतिच्छेद करते हैं, केवल तभी यह माना जा सकता है कि यौन शोषण के उद्देश्यों के लिये मानव तस्करी मौजूद है।
जैसे कि एक महिला को दूसरे देश के एक रिसॉर्ट होटल में वेट्रेस के रूप में नौकरी देने का वादा किया जाता है। संपर्क व्यक्ति उसे वहाँ तक पहुँचने में मदद करता है। जब वह वहाँ पहुँचती है, तो उसके यात्रा दस्तावेज़ जब्त कर लिये जाते हैं, और उसे होटल के ग्राहकों के साथ यौन संबंध बनाने के लिये मज़बूर किया जाता है।

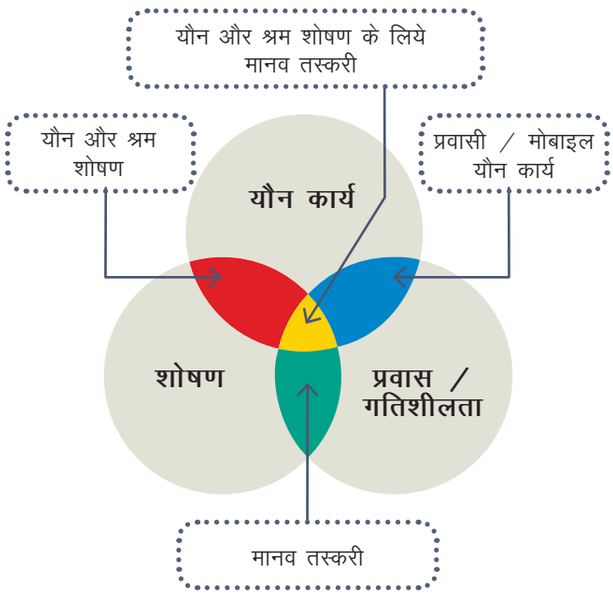

यिंगवाना, वॉकर और एचर्ट द्वारा विकसित यह मॉडल यौन कार्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है और उसमें अंतर करता है और उपयुक्त और अधिकार–आधारित तस्करी विरोधी कार्यक्रमों की संकल्पना के साथ।

यौन कर्मियों के अधिकारों की पैरवी करने वाले साक्ष्य–आधारित तस्करी विरोधी (एंटी–ट्रैफिकिंग) कार्यक्रमों का समर्थन करते हैं जो मानव अधिकारों का सम्मान करते हैं, और जो जवाबदेही और पारदर्शिता पर ज़ोर देते हैं।

केस स्टडी

उदाहरण के लिये, भारत में दरबार महल समन्वय समिति द्वारा विकसित और कार्यान्वित स्व–नियामक बोर्ड यौन कर्मी समुदाय के साथ मिलकर काम करता है। यह स्वास्थ्य सेवाओं के साथ संबंधों पर आधारित है और इसमें कठोर सुरक्षा और गोपनीयता के तंत्रों के साथ केस प्रबंधन और केस फॉलो–अप किया जाता है। उन्होंने अन्य एजेंसियों की तुलना में तीन गुना अधिक तस्करी की गयी महिलाओं और लड़कियों की मदद की है।

संदर्भः *African Centre for Migration & Society (2010) "Human Trafficking & Migration". Migration Issue Brief 4; Global Alliance Against Traffic in Women (GAATW) (2018) "Sex Workers Organising for Change: Self- representation, community mobilisation, and working conditions"; Global Network of Sex Work Projects (2019) "Briefing Note: Sex Work is not Sexual Exploitation"; Global Network of Sex Work Projects (2019) Community Guide: The Impact of Anti-trafficking Legislation and Initiatives on Sex Workers; International Committee on the Rights of Sex Workers in Europe (2019) "Trafficking 101 - A Community Resource for Sex Workers' Rights Activists"; Steen et al (2014) "Trafficking, sex work, and HIV: Efforts to resolve conflicts." The Lancet, 385(9963), 94–96; Protocol to Prevent, Suppress and Punish Trafficking in Persons Especially Women and Children, supplementing the United Nations Convention against Transnational Organized Crime Adopted and opened for signature, ratification and accession by General Assembly resolution 55/25 of 15 November 2000; Yingwana, N, R Walker, and A Etchart, "Sex Work, Migration, and Human Trafficking in South Africa: From polarised arguments to potential partnerships", Anti-Trafficking Review, issue 12, 2019, pp. 74-90.*